Class - I. Com XII
Subject - EPS
Topic - Demand Forecasting
Lecture - 07
Prepared by. Dr C P Sahu
Marwari College. Darbhanga.

## मांग पूर्वानुमान - (1)

उत्पाद, कुल मात्रा, क्रय ग्राहक समूह, भौगोलिक क्षेत्र, समय अवधि एवं बाजार वातावरण का अध्ययन बाजार मांग का निर्धारण करते समय आवश्यक है कि इस आकलन को ही मांग का पूर्वानुमान कहा जाता है।

ग्राहक में किसी वस्तु एवं सेवाओं को खरीदने की इच्छा एवं क्षमता को हम मांग कहते हैं। जब कोई ग्राहक किसी वस्तु एवं सेवाओं को खरीदने के लिए इच्छुक हो एवं खरीदने के लिए सक्षम हो तो उसे वस्तु की मांग कहते हैं। सभी भावी ग्राहक जिनमें किसी उत्पाद अथवा सेवा को खरीदने की इच्छा एवं क्षमता दोनों होती उसे कुल बाजार कहते हैं।

कोटलर साहेब के अनुसार - "एक उत्पाद की बाजार मांग में एक परिभाषित ग्राहक समूह द्वारा एक परिभाषित भौगोलिक क्षेत्र, समय अवधि, विपणन वातावरण एवं एक परिभाषित विपणन योजना के अन्तर्गत कुल मात्रा खरीदी जायेगी।" मांग पूर्वानुमान फर्म को वस्तुओं की मांग का सही आकलन तथा इसकी योजना तैयार करने में सहायक होता है। मांग पूर्वानुमान प्रभावपूर्ण सक्षम योजना के निर्माण में सहायक होता है। औद्योगिक दृष्टि से विकसित देशों में मांग पूर्वानुमान काफी प्रभावित है जहाँ मांग की शक्ती पूर्ति की शक्ती से अधिक अनिश्चित है, जबकि विकासशील देशों में स्थिति विपरीत होती है। इन देशों में अत्यधिक कीमतें एवं काला बाजारी पूर्ति को संकुचित कर देते हैं।

भारत जैसे देशों में पूर्ति पूर्वानुमान मांग

पूर्वानुमान की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण साबित होता है लेकिन औद्योगिक अनुज्ञापत्र में छूट एवं आर्थिक उदारीकरण की नीति के परिणामस्वरूप भारत जैसे देशों में भी परिस्थितियाँ बदली है।

इस तरह भारत में भी माँग पूर्वानुमान का महत्व बढ़ता जा रहा है।

माँग पूर्वानुमान में सम्मिलित घटक —

किसी कंपनी के बाजार वातावरण का संबंध उन समस्त बाह्य घटकों एवं शक्तियों से है जिनका संबंध बाजार प्रबन्ध की क्षमता को वांछित उपभोक्ताओं के साथ विकसित करने से होता है।

माँग पूर्वानुमान में छः कारक सम्मिलित किये जाते है —

(1) पूर्वानुमान की अवधि के अन्तर्गत निम्न कारक आते है —

(i) अल्पकालीन पूर्वानुमान - अल्पकालीन पूर्वानुमान 12 महीने की होती है। जो बिक्री मात्रा, उत्पादन तालिका, इन्वेन्ट्री नियंत्रण बजटिंग एवं रोकड़ प्रवाह के नियोजन के लिए उपयुक्त है।

(ii) मध्यकालीन पूर्वानुमान - इसके अन्तर्गत 1 से 2 वर्ष की अवधि अनुमानतः, संचालन तालिका एवं श्रम के कुल कार्य नियोजन के लिए उपयुक्त है।

(iii) दीर्घकालीन पूर्वानुमान - इसके अन्तर्गत तीन वर्ष से 10 वर्ष तक अवधि पूंजीगत व्यय, कर्मचारी आवश्यकताएं, वित्तीय, कच्ची सामग्री तथा शोध एवं विकास के आकार एवं क्षेत्र के निर्धारण के लिए उपयुक्त है।

(2) पूर्वानुमान के स्तर - (i) सूक्ष्म स्तर (ii) कंपनी स्तरीय (iii) उद्योग स्तरीय

(3) उत्पादन का वर्गीकरण (4) सामान्य तथा विशिष्ट पूर्वानुमान

(5) पूर्वानुमान की समस्याएं एवं विधियाँ (6) विशिष्ट कारक

माँग पूर्वानुमान के प्रमुख विधियाँ — (1) सर्वेक्षण (2) सांख्यिकी विधि (3) मार्गदर्शन निर्णायक विधि इत्यादि को शामिल किया जा सकता है।

— x —

Scanned with CamScanner